

॥ विषय-परिचय ॥

१ वीतराग स्तुति-भाषणानुवाद. (डॉ. भगवानदास मनसुभलाई.) ...	१२७
२ सत्यशानुवाद स्तुति ... (अनुवाद) ...	१३०
३ वैशाली. ... (रा. सुशील) ...	१३३
४ विविध विचार-ओष्ठी ... (राजपाण मंगलवाल वेरा) ...	१४०
५ आत्मकविद्याषुना सावन ... (अनु० विकलदास भू. शाह.) ...	१४२
६ श्री आत्मारामल शताभिष्ठ लेखमाणा (२) ...	१४६
७ वीसभीसहीना प्रभावक ज्येतिर्वर्द ...	१४९
८ चर्चापत्र-ओक झुलासो ...	१५२
९ स्वीकार-समालोचना. ...	१५५

श्री अद्भुतस्वाभीविरचित-

श्री बृहत् कल्पसूत्रम्-

(भूग, भाष्य, दीक्षा सहित पुस्तक १ लुँ पाठिंडा.)

अतिभान्य आ छेदसूत्रनो प्रथम लाग प्राचीन लंडारोनो अनेक लिखित
प्रतो साथे राणी अथाग परिश्रम लध मुनिराजश्री चतुरविजयल महाराज
अने मुनिराज श्री पुष्यविजयल महाराजे संशोधन करी तैयार करेल छे.
निरंतर उपयोगी धार्मिक दीतरिवाजेनी परिपाटी अने परंपरा विसराती जय
छे तेवा कागजां आ प्रकाशन डेवुं आवडारहायक थध पडे छे ते तेनां वाचको
समल शके तेवुं छे. आ सूत्रना प्रकाशनना प्रारंभमां तेनी उपयोगिता
शुं छे ? छेदसूत्र माटे नैन समाजनी शुं मान्यता छे ? ते माटे मुनिराजश्री
पुष्यविजयल महाराजे प्रासंगिक निवेदन सर्व कौध समल शके ते माटे
गुजराती लाषामां विद्वत्पूर्ख आपेल छे. प्रस्तावना विगेरे सर्व कौध समल
शके माटे गुजरातीमां आपेल छे. किंभत इ. ४-०-० ऐस्ट्रेज भार आना.

लेखा:- श्री जैन आत्मानंद सभा—भावनगर.

जलदी नाम नोंधावो. आ लाल पाषण थी मणो नहिं. थाडी नक्को सीढ़ीके छ

“ श्री त्रिष्ठिरात्राकु पृथृप चरन मूरा. ”

आगण प्रकट थेलनी अशुद्धिओने शोधी शुद्ध संशोधन करी उंचा
कोगणो, शास्त्री सुंहर टाईपमां निष्य यसागर प्रेसमां छपाय छे. श्री प्रथम पर्व क्षागण
शुद्ध र ना रोज असिद्ध थेशे. प्रथमथी आहुक थनार पासेथी बधा पर्वा मुहूल किंभते
आपवामां आवशो. डेटलाक आहुकोना नाम नोंधाई गयेला छे. व्याख्यान माटे,
लंडार माटे प्रत आकारे तेमज लाईप्रेरी अने गुहस्थ माटे झुक आकारे
छपावेल छे जे साईज जेवे ते रप्ष लगी जणाववुं

पाषण थःहुक थनारने सीढीकमां हुशो तो ज बधा पर्व मणी शक्षो.

लेखा:- श्री जैन आत्मानंद सभा—भावनगर.



ॐ



શ્રી આત્માનંદ પ્રકારા.



નમો વિશુદ્ધધર્માય, સ્વરૂપપરિપૂર્તયે ।

નમો વિકારવિસ્તાર—ગોચરાતીતમૂર્તયે ॥ ૧ ॥

“ સંપૂર્ણ જ્ઞાન-દર્શન-ચારિત્રાહિ વિશુદ્ધ ધર્મેવાળા,
સ્વસ્વરૂપની પૂર્ણતાને પામેલા અને વિકારાના સમૃદ્ધનો પાણ
પામેલા—એવા કે કોઈ મહાત્મા હોય તેને નમસ્કાર હો...”

ઉપમિતિલક્ષ્યપ્રયત્ના કથા.

પુસ્તક ૩૩ } વીર સં. ૨૪૬૨. પૌષ આત્મ સં. ૪૦. { અંક ૬ ડો.

શ્રી વીતરાગ સ્તવ-ભાષાનુવાદ.

૫૪ પ્રકારા.

પ્રતિપક્ષનિરાસ.*

વંશરથ-ધીરજંશા.

નેત્રો પ્રતિ સ્વામિ ! સુધાંજના સમા, લાવણ્ય-પુષ્યા તનુવંત આપમાં;
મધ્યસ્થથાયે હુઃખ અર્થ થાય છે, તો દ્વેષથી નિનહનની શો વાત છે ? ૧

* શ્રી વીતરાગ દેવનો કાઈ પ્રતિપક્ષી-નિરુદ્ધપક્ષી-શત્રુ છે નહિ-હોઈ શકે જ નહિં, એમ અને શ્રી હેમચંદ્રાચાર્યજીએ સુંહર અને માર્મિક સુજિત્પુરઃસર પ્રતિપાદન કરી અતાઘું છે.

૧ હે ભગવન ! તહારા પ્રત્યે મધ્યસ્થતા-તઠસ્થતા-ઉદ્દાસીનતા-ઉપેક્ષા રાખવી તે ખણુ
હુઃખાયક થાય છે, (કારણ કે સહદેવના શરણ વિના ભવભ્રમણુ હુઃખનો અંત ન આવે),
તે પણી દ્વૈપૂર્વક તહારી નિનહા કરે તેના હુઃખનું જ શું ? તાત્પર્ય કે તહારી
નિનહા કરવા યોગ્ય નથી ગોટલું જ નહિં પણું તહારા પ્રત્યે માધ્યસ્થ્ય પણું રાખવા યોગ્ય
નથી,-એકાંત ભક્તિ જ કરીય છે.

१२८

श्री अर्थमानंड प्रकाश.

त्वारो य हे नाथ ! विपक्ष^२ वर्तते, ने कोध आहिथी विखुम ते थतो;
 ए किंवदन्ती पण अत्र सांखणी, निवेदीओ ज्ञवन शुं धरे वणी ? २
 विरक्तत^३ जे ते प्रतिपक्ष वर्तते, तो तेह तो तात ! प्रतीत तुं थतो;
 जे रागी तो ते न विपक्ष तुज्ञो, अद्योत शुं हाय विपक्ष सूर्यनो ? ३
 अनुत्तरे ते लवसत्तमे अहा ! त्वारा मसो ! योगतथी करे स्पृष्टा;
 तो योगमुद्राहौंन अन्य दोकनी, शी पूछती वात ज ते संबंधनी ? ४
 तने अमे नाथपणे सर्वोकारीओ. तने स्तवीओ, तुज्ञने उपासौओ;
 न्राता तुंहीथी परे कोई छे नहिं, शुं योवीये शुं करीये अमे अही। ५
 भविन आचार स्वयं धरावता, प्रतारणे तत्पर जेह वर्तता;
 एवा परोथी^६ जग आ ठगाय रे ! पोऽर्मीओ डोनी समापमां ? अरे ! ६
 छे सर्वदा मुक्त छतां य विश्वना, करो रक्षा सर्वन-नाश-पालना !!!
 एवा ज वंध्यासुत तुद्य हेवने, आओ कियो योगतवंत भुवने ? ७

२ हे वीतराग ! त्वारो पण प्रतिपक्षी छे अने ते वणी कोध आहिथी युक्त छे, एवी
 उक्ति सांखणीने निवेदीओ शुं शुवे अरा के ? कारणु के त्वारो प्रतिपक्ष छे एवी
 असंलाभ वात सांखणीने तो निवेदीने इयी भरवा जेवुं थाय. तात्पर्य के-त्वारो प्रतिपक्ष
 छे एवी वात पण निवेदी झाने धरे नहिं, तो पणी माने तो शी ज रीते ?

३ हे धारो के लक्षीवनी आतर प्रतिपक्ष भानाए तो तेमां आम विरोध आवे
 छे : (१) जे तुं वीतरागनो प्रतिपक्ष विरक्तावीतराग होय, तो ते तो तुं ज छे एम
 प्रतीत थाय छे, (Both are identical) एटले प्रतिपक्षनुं अस्तित्व रहेतुं नथी.
 (२) अने जे ते प्रतिपक्ष रागी होय, तो पण ते त्वारो प्रतिपक्ष होई शडे नहिं;
 कारणु के प्रतिपक्षपणुं समान शीलाहिवाणा-समोवडीआमां धरी शडे; पणु आ तो क्यां सूर्य
 अने क्यां आगीओ ? आम अीन प्रकारनी युक्तिथी त्वारो प्रतिपक्ष-समोनवीओ-विरोधी
 घटतो नथी,-आप्या विश्वमां त्वारा सामा पक्षे उभो रडी शडे एवो कोई नथी.

४ अनुत्तर विमानवासी हेवो 'लवसत्तम' क्लेवाय छे, कारणु के सात लव विश्वा
 आयुष्य होत तो ते अनुत्तर विमाने ज्ञवाने अहवे भोक्तव्यनिते पामत. अनुत्तर
 क्लेवातुं कारणु ए के आथी उत्तर-अधिकतर आयुस्थिति नथी. क्लेवुं छे के-

"ठिर्ण सेठा लवसत्तमा वा"

श्री सुवर्णतांश १, ५, २४

५ वंचनमां-हगवामां. ६ अन्य दर्शनीओ.

७ नित्यमुक्त छतां जे विश्वना सर्वन, पालन अने संलाभमां तत्पर छे एवा
 वंध्यापुत्र ज्ञवा हेवने क्यो सचेतन भनुष्य सेवे ?-'वांजेणीनो पुत्र' क्लेवो ए
 जेम वदतोव्याधात छे-तेम एवा प्रकारतुं हेवरवह्य पण वदतो व्याधात छे स्वयं ज
 अंडित थाय छे. अवे कनिष्ठे परदर्शनीओ क्लेवो हेवने वंध्यासुनता उपमा आपी
 तीव्र कटाक्ष कर्मी छे.

श्री वीतरागस्तव-लाभानुवादः.

१२६

कामार्ति^१ ने जठराजिन-आर्ति^२ के, एवा य हेवोर्थो थता कृतार्थि क्षेत्र ! !

देवास्तिक्तो^३ ते पर दर्शनोत्तमा, हा हा ! कुरे निन्हव तु समानना. ८

अपुष्प५ शा डोध प्रभाषुनो वणी, उत्प्रेक्षया तेम ज कल्पना करी;

गर्जिंत गेहु पर वाहौ एहुवा, न माय हेहु त्यम निज गेहुमां ! ! ! ६

रथेष्टुता.

स्नेहराग दृढ कामराग वा, शक्य छे संक्षमां निवारवा;
दृष्टिराग^{१०} पण दृष्ट छेवो, संतने पण सुदृकरो हवेत. १०

दृष्टि तो सम, सुण पसन्न ने, जेहुं वयन प्रिय लोकने;
एहुवा औतिह नाथ ! तुं प्रति, रे' उदास जन मूढ हुर्भति. ११

अनुष्टुप्.

वायु थंसे द्रवे अद्वि, जल जवले कवचित् यदि;
तोय आम^{१२} थवा योऽय, रागाद्विवस्त ना कही. १२

इति पष्ठः प्रकाशः

लगवानहास भनःसुभलाद्य भङ्गता.

८ अत्रे श्री क्लिकालसर्वजे भार्मिक उपहासमिश्रित कटाक्ष साथे ऐह व्यक्त
क्षेत्रो छे डे:-कामाजिन अने जठराजिनी पीडाध रहेला हेवोर्थो पणु के पेताने
कृतार्थ-कृतकृत्य भाने छे एवा परदर्शनी देवास्तिक्तो-युरत देवभक्तो भियारा अरे रे !
आप जेवानो निन्हव-अपवाप करे छे !!

९ आकाशपुष्प जेवुं डोध प्रभाषु उत्प्रेक्षीने अने कल्पीने धरमां गाजता एवा
' गुहशरा ' परवानीओ। पेताना देहमां डे जेहुमां भाता नथी ! झूलीने शणका अने छे !!

१० दृष्टिराग छेवो संतने पणु कहिन छे.

आप्ति हिं रागद्वेषमोहनामेकान्तिक आत्यन्तिकशक्षयः । सा येषा-
मस्ति ते खल्वाप्ताः ॥

स्यादादमंजरी. क्षेत्र. १ निवरण.

अर्थात्-आप्ति एट्टे राग-द्वेष-मेहतो एकान्तिक अने आत्यन्तिक क्षय,
ते ज्ञेहे हेय ते आम-विश्वसनीय पुरुष.

सत्य ज्ञाननुं रहस्य.

जैन धर्मनी दृष्टिये।

[गतांक पृष्ठ १०८ थी शह]

येतना के चित्तनुं अस्तित्व लौतिक पदार्थोथी स्वतंत्र होय एम विश्वने मायादृप गणवाथी प्रतीत थष्ट शके छे. आनुं कारण ए के चित्तनी उपर आधार राखतां द्रव्यमांथी चित्तनी संभावना न ज होइ शके. विश्वव्यापी येतना ज सत्य वस्तु छे एम वेदान्त माने छे. आ विश्वव्यापी यैतन्यने वेदान्त ईश्वर के अहं पणु कहे छे. अहं सिवायनुं अधुं ये अभ-इप्प छे, एवो वेदान्तनो स्पष्ट भत छे.

कुहरतना नियमोनी अनिवार्य आवश्यकता अने एकदृप्ता भाटे लौतिक पदार्थोनुं अस्तित्व खास जड़नुं छे एवो हलीलनो प्रतिकार सहेलाइथी थष्ट शके छे. आभुं ये विश्व सत्य होय के काल्पनिक होय पणु तेथी प्रायोगिक विज्ञानमां कंध पणु परिवर्तन नथी थतुं. कुहरतना नियमो कुहरतनां स्वदृप विषयक आपणा विचारो उपर लेश पणु निर्भर रहेल नथी. कुहरतनुं स्वदृप सत्य होय के काल्पनिक होय अने ए संभांधमां आपणा विचारो गमे ते होय. कुहरतना नियमो स्वायत्त छे. कुहरतनां स्वदृप संभांधी आपणा विचारोनो निर्भाध कुहरतना नियमो उपर चाली नथी शकतो.

मायावादनी दृष्टिये कुहरतना नियमो संभांधी कॅन्टनुं मंतव्य सत्य छे एम सामान्य रीते मनाय छे. कॅन्टनुं ए मंतव्य नीचे प्रमाणे छे:—

“वस्तुओनुं अस्तित्व केटलाक नियमोने आधीन छे एम अनुबव उपरकी आपणुने जण्याय छे. नियमो अने वस्तुओनो संभांध अहु विचारवा जेवो छे. नियमोमां वस्तुओ अंतर्गत थती होवानुं मनाय तो वस्तुओने अनुबक्षीने नियमो छे एम कही शकाय. वस्तुनुं अस्तित्व अमुक स्वदृपमां अवश्य होवुं जेहुच्ये एम अनुबव उपरकी घोष नथी भणतो. वस्तुओनां स्वकीय स्वदृपनुं शिक्षणु अनुबवथी अशक्य छे.”—(Prolegomena pp, 50-51.)

वस्तुओनां स्वदृपना संभांधमां विचारणाथी यथार्थ ज्ञान प्राप्त थके छे. वस्तुओनो अनुबव वस्तुओना संसर्गीथी थाय छे. वस्तुओनो अनुबवयुद्धिना नियमोने सर्वहा अनुइप्प नीवडे छे. आथी वस्तुओना

सत्य ज्ञानातुं रहुस्य.

१३१

नियमो युद्धिना नियमो उ एवा ज क्वाई नियमोने स्वाधीन छे एम कही शकाय. प्रकृतिना नियमोनी अचलतामां सङ्केज पणु परिवर्त्तन कहापि शक्य नथी

कुदरतना नियमो अविचल अने सुनिश्चित छे एवा निर्णय सर्वथा सयुक्तिक छे. द्रव्यनां स्वदृपथी तेभनी एकता अने अचलता सुरक्षित रहे छे. चित अने लौतिक पहार्थ ए सौथी महात्वनां द्रव्ये छे. चेतनानो विश्व साथे संसर्ग रहे तो विश्व काल्पनिक होय तो पणु सत्य विश्वनी परिस्थिति जेहली ज तेनी आवश्यकता आपणुने थर्डपडे ए निविवाह छे.

अरो जाता क्वाणु छे ? ए प्रश्न इवे आपणी सभीप उपस्थित थाय छे. क्वाई मनुष्य पोते ज खरी रीते जाता बनी शके ? युद्ध ए अरो जाता छे के नहि ? एवा एवा अनेक प्रश्नो आ संबंधमां आपणे विचारवाना रहे छे. जे मनुष्य पोते ज खरो जाता होय तो तेने काणे करीने अमुक वस्तुओ उ घटनाओनी विस्मृति न थाय. ज्ञान अने विस्मृतिनो भेद न होइ शके. ज्यां ज्ञान छे त्यां विस्मृतिनी संभावना न होय. विस्मृत थयेकी वस्तुओ उ घटनाओनुं पुनः समरणु थर्ड शके छे ए उपरथी ज्ञान तो कायम रहे छे एम प्रतीत थाय छे. आधुनिक मानसशास्त्र उपरथी विस्मरणुनां संभावनीय कारणातुं यथार्थ ज्ञान मणी रहे छे. भूलमां हैंकी हीघेकी वस्तुतुं हीप्नोटीजमना प्रतापे समरणु थयाना द्रष्टान्तो पणु मणी आवे छे. वस्तु हैंकी हेवामां आवी हती ए क्वाणे जाण्युं ? वस्तुने हैंकी हेवाती क्वाणे जेह ? वस्तु क्यां पडी अनुं समरणु केने थयुं ? विगेरे प्रश्नो आ संबंधमां जाठे ए साहजिक छे. ए प्रश्नोनो ज्ञानाएक ज होइ शके अने ते ए ज के आत्माए आत्मा सचियानांह स्वदृप छे, एम वेहान्त कहे छे. सचियानांह एट्टेआस्तित्व, चेतना अने सुख. आत्मा ए अरो जाता छे, शरीर नहि. चेतना अनांत अने सर्वज्ञ छे एवी पणु वेहान्तनी मान्यता छे.

द्वेष्ट आत्मा अने परमात्मा वच्चे संपूर्ण एकदृपता छे, क्वाई पणु आत्मा परमात्माथी लिन नथी एम वेहान्तनी द्रष्टिए निश्चयपूर्वक कही शकाय. चेतना अभर छे अने ते सदाकाण अपरिवर्तनशील छे. वस्तुओनुं ज्ञान अने अन्वीक्षणु चेतना उपर ज निर्भर छे. चेतना जन्म, मृत्यु अने समयथी पणु पर छे. चेतनादृप महान् आंतर सत्य तत्त्व साथे एकता करनार ज्ञानात्माओ ज अभरत्व प्राप्त करी शके छे. द्रश्यमान विश्वने इद्रियोनी कियानो निर्णय होवाथी, इद्रियोथी द्रश्यमान विश्वनुं महात्व

૧૩૨

શ્રી આત્માનંદ પ્રકાશ.

વિશિષ્ટ પ્રકારનું નથી. ખરું મહત્વ તો ચેતનાનું જ છે. ચેતના એ જ જીવન્ત સત્ય તરત્વ છે. સ્વભાવમાં નિરખેતી વસ્તુઓના સંખ્યામાં મમત્વલાવ સેવી હુઃખી થવું તેના કરતાં વસ્તુના સ્વરૂપમાં શરૂઆખી એ ધૂષ છે.

“ તત્ત્વમદિ ” અર્થાતુ “ તે (પરમાત્મા) તું જ છે ” એ વેદાન્તને મોક્ષમંત્ર છે. આથી સચ્ચિદાનંદ સ્વરૂપ અંતરાત્મા એ જ આરાધનાને પાત્ર છે. એની જ લક્ષ્ણ ધટે છે. સચ્ચિદાનંદ સ્વરૂપ આત્માની લક્ષ્ણ અને આરાધનાથી સત્ય સુખ, શાન્તિ અને અમરત્વની પ્રાપ્તિ થાય છે. આત્માની લક્ષ્ણ વિના અજ્ઞાન અને હુઃખુંથી રહેણું છે. સત્ય સુખના વાંચ્છુકોએ આથી આત્માને સાક્ષાત્કાર કરી લેવો જોઈએ. આત્માને સાક્ષાત્કાર એ જીવનનું સર્વોચ્ચ આધ્યાત્મિક ધૈર્ય છે.

લૌતિક વિશ્વ ચિત્તને પરાધીન હોવાથી તે નાના પ્રકારના અસંખ્ય ભાવોથી પરિપૂર્ણ એક મહાન ભાવરૂપ છે. વસ્તુઓ એ ભાવરૂપ છે અને ભાવનું સત્ય અન્નીક્ષણુમાં રહેણું છે એમ બાકલી કહે છે. વેદાન્તીઓએ અસ્તિત્વનું રહુસ્ય આ પ્રમાણે જ સમજે છે. વેદાન્તીઓને સચ્ચિદાનંદ સ્વરૂપ આત્મા વિના ખંડું યે અભરૂપ લાગે છે. આત્મા તેમને અભરૂપ લાગે છે. વેદાન્તીઓનું અભ્ર વિષયક મંત્રવ્ય શાખાતીત છે. વાણીથી વ્યાખ્યેય સર્વ વસ્તુઓના અસ્વીકારથી જ અભ્રની વ્યાખ્યા થઈ શકે એમ વેદાન્તીઓ માને છે. આથી અભ્રની વ્યાખ્યામાં ‘ નેતિ નેતિ ’ (તે નહિ, તે પણ નહિ) એ શાખો ખાસ આવશ્યક થઈ પડે એ સમજી શકાય તેવું છે. વેદાન્તીઓ અભ્રની વ્યાખ્યા કરતાં ‘ નેતિ નેતિ ’ એ શાખોનો વારંવાર ઉપયોગ અવશ્ય કરે છે.

આત્માનું અસ્તિત્વ દરેક ક્ષેત્રોમાં પ્રવર્તે છે. આત્માના અસ્તિત્વનો અસ્વીકાર કે અવગણુના ન જ થઈ શકે. ચેતનાને અસ્વીકાર કેમ થઈ શકે ? આત્મા મૂત્રિમંત્ર દ્રષ્ટા છે. આત્મા મૂત્રયુથી પર છે. આત્માદ્વારી દ્રષ્ટા સંખ્યા જેને કંઈ જાન જ નથી તે વસ્તુત : કંઈ નથી જાણુંતો એમ કહી શકાય. જીવનમાં આત્માને જ ખરો જાણવાનો છે. આથી આત્માનું સત્ય જાન પ્રાપ્ત કરનારને હુન્યવી સવે જાન નિરર્થક અને લારૂપ લાગે છે. આત્મજ્ઞાન એ જ ખરું જાન છે. શાખતું આત્માનું સત્ય જાન પ્રાપ્ત કરનારને ખીલાં જાનની શી જરૂર રહે ? આત્મા એ જ ખરું જીવન છે. આત્માનું જાન એ જ સર્વોચ્ચ જાન છે. એ જાનમાં જ પરમસુખ છે. એ જાન જ મુક્તિહાયી છે.

वेशाली

લિંગવિદ્યાના રાજધાની.

(ગતાંક પૃષ્ઠ ૧૨૪ થી શરૂ).

બુદ્ધહેવનું પ્રથમ આગમન.

બુદ્ધહેવે પહેલવહેવાં વૈશાલીમાં પગલાં કથ્યાં તે વખતની પરિસ્થિતિ “મહાવર્સ્તુ” માં ભળી આવે છે. એ વખતે લયંકર રોગચાણો ક્ષાટી નીકળ્યો હતો. કોણો પોતાના ગ્રાણુ જ્યાવવા અહીંતહીં નાસસાગ કરી રહ્યા હતા. મૃત્યુના પંજમાંથી ઉગરવા કેટલાકો, બીજે કોઈ ઉપાય ન સુઝવાથી, આસ-પાસના તાપસોના આશ્રયે જઈ રહ્યા હતા. કોઈ રીતે નગરમાં શાંતિ થાય તે સાડું સૌ તનતોડ પ્રયત્ન કરતા હતા.

એ વખતે લિંછવિરાજ તોમરની આગેવાની નીચે કેટલાક નાગરિકો મંગધની રાજધાની-રાજગૃહમાં યુદ્ધહેવ પાસે પહોંચ્યા. તેમણે યુદ્ધહેવની સહાય ભાગી.

જેન અંથોમાં પ્રસિદ્ધ રાજીવી બિંબિસાર-શ્રેણિક, એ વેળા મગધના સિંહાસનને શોભાવતો. ખુદુદેવે બિંબિસારની અનુમતિ મેળવવા લિચ્છવિરાજ તોમરને આજા કરી.

તોમરે ભગધરાજ પાસે જઈ વિનતિ કરી. બિંબિસારે ઘણી ખુશીથી પોતાની સમ્મતિ આપી. વિશેષમાં એણે તોમરને ઉહેશીને કલ્યું કે: “તથાગતનું તમારી સીમામાં સારું સ્વાગત થયું જોઈએ.” તોમરે એ આહેશ માથે ચડાવ્યો.

શ્રેણિક પાતે બુદ્ધહેવને વળાવવા પોતાના રાજ્યની છેલ્લી સીમા ચુધી સાથે ગયો. કિંચચિચીએને આ ચમત્કર્ત કેવા રોગચાળામાંથી ઉગાડી લેવા બિનિસારે બુદ્ધહેવને ફરી એક વાર આગ્રહ કર્યો.

વિશુદ્ધ ચૈતન્ય એ જ વિશ્વમાં અપરિવર્તનશીલ અને સહૈવ જીવન્ત છે, એવો અદૈતમતવાહીએનો મત ઉપરોક્ત વિચારોથી સિદ્ધ થાય છે. ચૈતન્યમાં ગુણ કે સત્ત્વની રહિણો ડેઈ કાળે પરિવર્તન નથી થતું. જાગૃત કે સુધૂમ અવસ્થામાં ચૈતના તેને તે જ રહે છે. —ચાલ

૧૩૪

શ્રી આત્માનંદ પ્રકાશ.

જે માર્ગ બુદ્ધહેવ વિહરવાના હતા તે માર્ગ એટલે કે રાજગૃહથી ગંગા નદી સુધીનો પોતાનો રાજ્યપ્રદેશ ખૂબ સાક્ષ કરાવ્યો—હુથેલી જેવો સમતળ કરાવ્યો, સુગંધી દ્રવ્યો છાંટકાવ્યા, ધળ—પતાકાઓ બંધાવી અને નકશીથી ભરેલા ભારે ભૂહૃત્યવાળાં વચ્ચે બીજાવ્યાં. ડેક્ટેકણે ફૂલ પથરાવ્યા અને અગુરના ધૂપથી દિશાઓ ભરી દીધી. શ્રેણિકની સાથે એના ડેટલાક ફરણારીઓ પણ બુદ્ધહેવને વિહાય આપવા ગયા.

સામેથી લિચ્છવિ—નાગરિકોએ પણ એવું જ ભર્યું સ્વાગત કર્યું. વૈશાલીવાસીઓ ભાતભાતનાં લાલ, નીલ, હરિત, હરિદ્રા, પિંગળ અને રક્ત વર્ણના ઉજવળા વચ્ચો પહેરી તૈયાર રહ્યા. બુદ્ધહેવ આ લિચ્છવીઓના સુંદર, મનોહર, ઉજવળ પોષાક વિગેરે જેઈ ખૂબ ખુશી થયા. પોતાની સાથેના લિક્ષુઓને એમણે કદ્યું:

“ લિક્ષુઓ, ત્રયસ્કિંશ સ્વર્ગના દેવતાઓને તમે સુહર્ષના નગરમાંથી ઉપવન ભણી જતા નથી જેથા. સંપદ અને ઐશ્વર્યમાં એ દેવતાઓની સાથે સ્પર્ધી કરે એવા આ લિચ્છવિઓને એક વાર જેઈ લો. એમનાં હાથી, સુવર્ણાછ, સુવર્ણાદોલા, સુવર્ણરથ જુઓ. સુવર્ણાદારશ્રી શોભતા, લાખના રંગથી રંગેલા રાતા વચ્ચોવાળા આ લિચ્છવિ જુવાનો, વૃદ્ધો અને ગ્રૌડી ડેવી મનોહર છટાથી ચાલી રહ્યા છે તે જુઓ.”

અંગાના કિનારાથી માંડી વૈશાલી—નગરી સુધીનો માર્ગ, રાજ શ્રેણિક કરતાં પણ સરક રીતે એમણે શાણુગારી રાખ્યો હતો. બુદ્ધહેવ અને એમના લિક્ષુઓના ઉતારા માટે તેમજ એમનાં સુખ—સગવડ અથે લિચ્છવિઓએ પૂરેપૂરી કાળજી રાખી હતી.

બન્ધું એવું કે બુદ્ધહેવની પદ્ધરામણી થતાં રોગચાળાનો ઉપરથ શરીર ગયો. જેઓ ધીમાર હતા તેઓ પણ સાજ થઈ ગયા.

આદર—સન્માન સાથે લિચ્છવિઓ બુદ્ધહેવને નગરમાં લઈ ગયા. માર્ગમાં બુદ્ધહેવ અને લિક્ષુઓના આરામ માટે પણ એમણે જોઠવણુ કરી રાખી હતી. નગર—પ્રવેશ પછી બુદ્ધહેવે માંગળિક—સ્વસ્ત્યન ગાથા સંભળાવી.

એમણે વૈશાલીની અંદર કે ખાડાર રહેવાની ના પાડી. જોશુંઝીના નિમંત્રણને માન આપી, નગરથી દૂર ઉતાર દિશામાં ઘણું દૂર સુખી પ્રસ્તેલા અરહય “ મહાવન ”માં આશ્રય દીધી.

વैशाली-लिंग्छवीओની રાજધાની.

૧૩૫

કુટાગારશાળા.

લિંગછવિઓએ ગૌતમ બુધ અને એમના સંઘના લિક્ષુઓની સગવડ માટે, મહાવનમાં એક કુટાગારશાળા ખંધાવી હતી. બુદ્ધહેવે એ સ્થાનમાં વસવા લિક્ષુઓને ભલામણ પણું કરી હતી. એક વાર લિંગછવિઓએ મહાવનમાં જઈ તપાસ કરી તો તે હિવસે બુધદેવ આપાલ-ચૈત્યમાં જ આપે. હિવસ રહ્યા હતા એમ સાંલજણું. લિંગછવિઓ ત્યાં ગયા અને બુધદેવ તેમ જ બૌધ્ધ સંઘના લિક્ષુઓ માટે કુટાગારશાળા અર્પણ કરી.

એ ઉપરાંત જે જે ચૈત્યમાં બુદ્ધદેવ રહ્યા હતા તે ખંધાં ચૈત્યો-સમાચ્ર ચૈત્ય, બહુપુત્ર ચૈત્ય, ગૌતમ ચૈત્ય, કપિનિદ્ય ચૈત્ય, મર્કિટહૃદ-તીર ચૈત્ય લિંગછવિઓએ બુધદેવને સમર્પ્યાં. એ પછી ગણિકા આમ્રપાલીએ પણ પોતાનો મહોટો આમ્રકુંજ હૌધ સંઘને નામે ચડાવી દીધ્યો. બાલિકાઓએ પણ આલિકા-છભિ અથવા આલિકા-રામ બૌધ્ધ સંઘને સુપ્રત કર્યાં.

રાજગૃહની જેમ વैશાલીમાં બૌધ્ધ ધર્મનો ગૂણ પ્રચાર કરવાની બુધદેવની ઢંઢા હતી, તેથી તેઓ વખતોવખત વैશાલીમાં આવી લોકોને ધર્મનો ઉપહેશ આપતા. બુધદેવે “રતન સૂત”માં જે ટીકા ઉમેરી છે તેમાં પણ લગભગ એવી જ જતનું વર્ણન છે. એ કહે છે તેમ વैશાલીમાં એકલો રોગચાળો જ ન હતો. લોકો ફુલિક્ષ અને ભૂતના ભયથી વ્યાકુળ અન્યા હતા.

બૌધ્ધ સાહુઓની શિથિલતા.

બુધદેવની પોતાની હૈયાતીમાં જ સંઘના સાધુઓમાં વખતોવખત શિથિલતા આવતી હોય એમ ‘મહાવળ્ગ’ના વિવેચન પરથી જણાય છે. દાખલા તરિકે એક વાર બુધદેવ રાજગૃહથી વैશાલી આવતા હતા. ગોતમક-ચૈત્યમાં રાત્રે ઉત્ત્યા. એ વખતે સાધુઓએ, જોઈએ તે કરતાં પણ વધારે અને સુશોલિત કપડાં સંધરેલાં એમણે જોયા.

એક તો શિયાળાનો સમય હતો અને રાત્રે હિમ પણું પડતું હતું. આછામાં આછા કેટલાં કપડાંથી ચલાવી શકાય એ બુધદેવે પોતે આચરી ભતાંયું અને એ પછી એ પ્રકારનો લિક્ષુઓને ઉપહેશ આપ્યો.

કુટાગાર-શાલામાં એક વાર પીવાતું પાણી બગડી ગયું. લિક્ષુઓ તો એ પાણી જ વાપરતા. બુધદેવે સૈને યોલાવીને, પાણી ગણ્યા વિના-શુદ્ધ કર્યી વિના ન વાપરવું એવી ભતલભજો ઉપહેશ આપ્યો.

૧૩૬

શ્રી આત્માનંદ પ્રકાશ.

કેટલાક સાધુઓ, ગૃહસ્થને ત્યાંથી ખૂબ સારાં સારાં મિથાજ લઈ આવતાં અને પછી માંદા પડતા. યુધ્ઘહેવે એ સમયના નામાંકિત વૈદ જીવક કેમારલચ્ચને એલાવી સાધુઓની ચિહ્નિસા કરાવી.

રહેવાનાં મફાનો કેવી પદ્ધતિએ તૈયાર કરવાં જોઈએ તે પણ તેમણે વૈશાલીના એક વ્યાપ્તિયાનમાં જ કહ્યું હતું:

વૈશાલીમાં એક વાર એ લિક્ષુએ લડી પડ્યા. બાદ નામના લિક્ષુએ, ખીજન લિક્ષુના વિષયમાં કેટલીક પોઠી અફવાએ હેલાવી. ગૌતમ ખુલ્લે એ વાત જાણી ત્યારે તેમણે બદ્ધતું લિક્ષાપાત્ર ખુંચવી લેવાની સંઘને આજા કરી. પછી બદ્ધને ઘણો પસ્તાવો થયો. તેણે ખીજન લિક્ષુની માઝી માળી. એ પ્રકારણું એટલેથી જ પતી ગયું.

જૈન સંઘમાં જેવી સાધુ, સાધી, ક્ષાવક, શાવિકાની-ચતુવિધ સંઘની વ્યવસ્થા હતી તેવી ખોદ્ધ સંઘમાં ન હતી. લિક્ષુણીને માટે સંઘમાં સુદ્ધા સ્થાન ન હતું. ખુદ્ધહેવ વૈશાલીમાં-મહાવનની કુટાગારશાળામાં હતા એવખતે મહાપ્રજ્ઞાપતિ-ગૌતમી (ખુદ્ધહેવની ધાત્રી) કેટલીક સ્ત્રીઓ સાથે કપિત-વસ્તુથી ત્યાં આવી અને પોતાને લિક્ષુણી બનવાનો અધિકાર આપવા આજીજી કરી. પહેલાં તો એમણે લિક્ષુણી-સંઘ સ્થાપવાની ના પાડી; પણ આનંદના સમજાવવાથી જરૂરતિ આપી.

પાલી તેમજ સંકૃત સાહિત્યમાં વૈશાલીનું જે વર્ણન મળી આવે છે તે પરથી વૈશાલી ભારે સમુદ્ધિવાળી નગરી હોય એમ લાગે છે. પાલી અંથ-મહાવગ્ગ કહે છે તેમ વૈશાલી ધનધાન્યથી ઉલરાતી હતી, પુષ્કળ માણુસો અહીં વસતા અને ખાનપાનની સામની પ્રચુર પ્રમાણમાં રહેતી. મોઠી અદ્ભુતિઓ, શિખરખંધ મંહિરો, ઉધાનો અને કમળ-સરોવરો પણ હતા.

લલિતવિસ્તરામાં વૈશાલીનો વૈલલ ખતાવનારો એક પ્રસંગ છે. તુલિત સ્વર્ગના હેવો એકઠા થયા છે. બોધિસત્ત્વે ક્યા વંશમાં જન્મ લેવો તેની ચર્ચા ચાલે છે. તુલિત હેવલોકના હેવો કહે છે કે “ વૈશાલીમાં જ બોધિસત્ત્વે જન્મ લેવો જોઈએ. વૈશાલીમાં ધન-ધાન્ય અને સમુદ્ધિની છોણો ઉતે છે. સુખ, ઔદ્યોગ, રેલાધ રહ્યા છે. એ સુંદર અને આંખને આરામ આપે એવા શહેરમાં વિવિધ જાતિનાં માણુસો વસે છે. ઘરો પણ કેટલાં મનોહર છે ? બળ્ણે-ત્રણું પ્રણી માળની હવેલીએ છે. ગૃહનાં શિખરો આકાશ સાથે વાત કરે છે. ક્રીલ્વા અને રાજમહેલ પણ છે. અસંખ્ય ઉધાનો કુસુમોની વાસથી છેડી રહ્યા છે.

વैशाली-लीच्छवीअमोनी રાજધાની.

૧૩૭

હેવલોક કરતાં આ નગરી કોઈ પ્રકારે ઉત્તરતી નથી. જ્ઞાધિસ્તવને જન્મ લેવા સારુ એ જ યોગ્ય સ્થાન છે."

ને કે હેવોએ એ સ્થાન પસંદ ન કર્યું, છતાં લિચ્છવિઅમોની રાજધાની-વैશાલી ઐશ્વર્યવાળી, સમૃદ્ધિશાળી હતી એ સંબંધે જરા ય શંકાને સ્થાન નથી. એ સિવાય વैશાલી હંમેશા ગાન-તાનથી ચુંલુ રહેતી એવો ઉદ્વેખ પણ મળે છે.

ક્રાહિયાનના સમયે મહાવન.

બુદ્ધહેવની પછી લગભગ એક હજાર વર્ષે ચીની સુસાઇર ક્રાહિયાન અહીં આવ્યો હતો. તે લણે છે કે "આ વિશાલ નગરીની ઉત્તર દિશામાં વિસ્તાર-વાળું અરણ્ય પડયું છે, અહીં આનંદના હેહાવશોષ ઉપર એક સ્તુપ છે. બુદ્ધહેવ અહીં એ ઓશરીવાળા :વિહારમાં રહેતા." આ વિહાર, મહાવન-વાળી કુટાગારશાળા જ હોવી જોઇએ.

બુદ્ધધોષ : મહાવન.

બુદ્ધધોષ, સુમંગળ-વિલાસિનીમાં મહાવનનો અર્થ શહેરની લાગોણથી માંડી છિમાલથ સુધીનો પ્રદેશ કરે છે. કુટાગારશાલાનો અર્થ હેવવિમાન જેવી આકૃતિ કરે છે. સ્તાંલાની ઉપર મહેલ હતો. અને મહેલની ઉપર શિંખર હતું; તેથી જણે કે હેવવિમાન જ હોય એવો લાસ થતો. ક્રાહિયાનના વર્ણન સાથે સરખાવતાં એક સ્તાંલ ઉપર નહીં પણ અનેક સ્તાંલ ઉપર સંઘારામ નિમયિા હશે અને મીનારા પણ હશે. ક્રાહિયાન જેને આંગણ્યા કહે છે તે વસ્તુતાઃ એક ઉપર બીજી જેવા હેખાતા હશે.

ક્રાહિયાન પછી બસે વર્ષે હુયાનસીંગ આ વિહારના અગનાવશોષ જોઇ ગયો હતો. તે પણ એને મળતું જ વર્ણન આપે છે.

આનંદના હેહાવશોષ.

દીણેટના થાંથોમાં અને ક્રાહિયાનના લખાણુમાં આનંદના હેહાવશોષ વિષે લગભગ એક સરળી ઘટના મળે છે. એમ કહેવાય છે કે પોતાના હેહનો હવે કંઈ જરૂર્સો નથી એમ માની આનંદ, મગધમાંથી વैશાલી તરફ જવા રવાના થયો. હેવતાએએ અભિતશાત્રુને એ સમાચાર પહેંચાડ્યા. અભિતશાત્રુ મગધનો સાચાર હતો. તેણે સૈન્ય તૈયાર કરાંયું અને ચોતે પણ રથમાં એસી, આનંદની પાછળ ગયો. બીજી તરફ વैશાલીમાં આનંદ આવે છે એમ જાણ્યી

૧૩૮

શ્રી ચાત્માનંદ પ્રકાશ.

લિંગવીચો તેતું સ્વાગત કરવા તૈયાર થયા. મગધ અને વૈશાલી વચ્ચે ગંગા નહીના વહેતી હતી. નહીના એક કિનારે અભતશત્રુનું સૈન્ય અને બીજી ડોર લિંગવીચોનો સસુદ્ધાય હાજર થઈ ગયો.

આનંદને સુંઅવણું થઈ. ચોતે જે મગધની હુદ છોડી વૈશાલીમાં જાય તો અભતશત્રુ ચુંબક જાહેર કર્યા વિના ન રહે અને જે ત્યાથી પાછો ફરે તો લિંગવીચો નારાજ થાય. આનંદે નહીના કિનારે જ સ્થિરતા કરી, ત્યાં જ એણે ચોતાનો હેઠ છોડ્યો. લિંગવીચો અને અભતશત્રુ વચ્ચે સમાધાન થયું. અનેએ આનંદના હેઠાવશેષનો અડધી લાગ લેવો એવી શરત સ્વીકારી. વૈશાલીમાં અને મગધમાં પણ આનંદના હેઠાવશેષ ઉપર સ્તૂપો નિર્માયા.

વૈશાલીને વિશોષ વૃત્તાંત.

શુનવ્યાંગે વૈશાલીનું વિશોષ વર્ણન આપ્યું છે. “ રાજ્ય ૫૦૦૦ લી. જેટલા વિસ્તારમાં છે. દેશની ભૂમિ ખૂબ રસાળ છે. આંખા, ડેળાં અને બીજાં ઇણો લરચક નીપજે છે. કોડો પણ સૌજન્યવાળા અને પરાપકારી છે. એમને કોઈ ધર્મ વિષે હુસથણ નથી. ”

ગીણી-થાંથ-ખાસ કરીને હુદલ થાંથમાં વૈશાલીને પુઢવી ઉપરના સ્વર્ગની ઉપમા આપવામાં આવી છે. મહોદી મહેલાતો, સુંદર બગીચાચો, આરામકુંને અને વિવિધ પક્ષીચોના કણ્ણુંપ્રિય કલરવને લીધે વૈશાલી બીજી અમરાવતી જેવું લાગતું. લિંગવીચોના આનંદ-ઉત્સવો બારે માસ ચાલતા. એ ઉત્સવ-આનંદને લીધે ખરેખર પ્રમોદના પ્રવાહ વહેતા.

વૈશાલીનું સ્થાન.

લિંગવિની રાજ્યધાની વૈશાલી ક્યા સ્થાને હુશે એ વિષે ઐતિહાસિકોનાં શ્રાડો મતલેદ છે. જનરલ કનિંગહામ, તિરહૂતના મુજફ્રદુર-જીવ્યામાં બસાદ ગામને પુરાતન વૈશાલી તરિકે ચોળાવે છે. સેંટ માર્ટીન એ વાતને ટેકો આપે છે. હુઃખની વાત એ છે કે કનિંગહામ જેવા જેઠાં તેવા પૂરાવા રજુ કરી શક્યા નથી. એટલે કનીંગહામનું કથન કેટલાકો માની શકતા નથી.

રાઈસ-ડેવીડો મત એવો છે કે તિરહૂતમાં જ કોઈ એક સ્થાને પુરાળું વૈશાલી હેવું જેઠાં; પણ તે કંઈ નક્કી સ્થાન બતાવી શકતા નથી.

ડૉ. ઉણવચું હોંડ સાહેણ સામાન્ય પુરાવાના આધારે સારાણું અથવા છાપરા જીવ્યાના એરાન્ડ નામના સ્થાનને વૈશાલી માને છે. એરાન્ડ ગંગાના ઉત્તર તીરે છે-છાપરાથી પ્રાય: સાત માઈલ દક્ષિણપૂર્વમાં છે.

વैशाली-लाघवीज्ञानी राजधानी.

૧૩૮

वैशाली संघर्षी એક ખાસ નિખંધમાં હો. રમીથ, ઉપરની છેલ્ટી વાતનો ઈનકાર કરે છે. તેઓ કનિંગહામના અતુમાનને વળગી રહે છે. ખસાઠ જ વैશાલી હોવું જોઈએ એમ કહે છે.

ઇ. સ. ૧૯૦૩-૦૪ માં જે જોદાણુકામ થયું હતું તેના આધારે ડૉ. ફ્રેડ્રિક સાહેબ ખસાઠને જ વैશાલી હોવાનું જણાવે છે. જોદાણુકામમાંથી ડૉ. ફ્રેડ્રિકને રાજ વિશાલકા ગઠ અને બીજી થોડી સામન્થી મળી આવી હતી. મારીના ત્રણ જુદા જુદા પ્રકારના થર પણ એક એક ઐતિહાસિક સત્ય સંલાદે છે. સૌથી ઉપરનો થર મુસ્લિમાન ચુગની વાત કહે છે. એનાથી પાંચ કૂટ નીચેનો થર ગુપ્ત સમયની કથા ઉચ્ચારે છે. અને ત્રીજો થર કથા પ્રાચીન ચુગનો હશે તે હજુ નથી સમજાયું.

સર જેન માર્શાલની યુક્તિએ એ વિષય ઉપર નવો પ્રકાશ નાચે છે. એ કહે છે કે બીજા થરમાંથી, એક આરડામાંથી સાત સો કેટલા મારીના સીક્ઝા મળી આવ્યા છે. ધાર્યું કરીને કરાર કે દસ્તાવેજ ઉપર મ્હોર આંકવામાં એ વપરાતા હશે. થોડા સીક્ઝા એવા છે કે જે અમલદારોના ઉપરોગમાં આવતા હશે અને થોડા એવા છે જે વેપારીએ વાપરતા હશે. એક મુદ્રામાં શિવલિંગ અતે ત્રિશૂળનું ચિનહે છે, અને “આમાટકેથર” શબ્દો લખેલા છે. એકાદ દેવમંદિરની એ મીઠા હોય એવા વધુ સંલગ્ન છે.

ગુપ્ત રાજ, રાણી અને રાજકુમારોના નામ ઉપરથી તેમ જ અક્ષરની કેાતરણી ઉપરથી ઇ. સ. ના ચોથા-પાંચમા સૈકાના ગુપ્ત-સમ્રાટના શાસન-સમયના હોય એમ લાગે છે.

બીજા કેટલાક સીક્ઝા ઉપરથી આ ભાગ “તીરભૂક્તિ” ના નામથી આપાયાતો હશે. બીજા કેટલાકમાં વैશાલી નગરીનું નામ પણ છે. એક ગોળા-કાર મારીના સીક્ઝામાં નહાની શી પુલછાળ છે અને એની વચ્ચેએવચ્ચ એક સ્વી પોતાની એ સખીએ સાથે ઉલ્લો છે. નીચે સમાનાંતર રેખાઓમાં આવા શબ્દો છે

(૧) [વૈ] શ્વાદ્વારા-અરપ્રકૃતિ-[કુ] (૨) તુભિણના [મુ] બીજી એક મુદ્રામાં પણ આવા જ અક્ષરો છે.

આ બધા ઉપરથી એ જ પુરાતન વैશાલીનું સ્થાન હશે એવો નિર્ણય બંધાય છે. જોદાણુકામ હજુ ધાર્યું અધુરું છે.

ખસાઠ સ્તૂપની નીચે-પૃથ્વીના પેટાળમાં, લારતીય ઈતિહાસની કોણું જાળે કેટલી એ અમૂલ્ય સામન્થી દાયારેલી પડી હશે ? (ચાલુ.)

વિવિધ વિચારશૈખી

માનવ જીવનતું સાક્ષય—

- ૧ અનંત જ્ઞાનીઓએ દ્શાવેલા માર્ગમાં વીયેનું સુસુરાવવું.
- ૨ તેમ ન બની શકે તો અહોરાત્ર તે માર્ગમાં રહેવાની અલિલાષા.
- ૩ પરમ ઉપકારી એવા શ્રી જિનેશ્વરહેવોના વચને પર પૂણું શર્કા.
- ૪ જિનવાણી પ્રત્યે અહુમાન.
- ૫ તે માર્ગમાં-જિનેશ્વરના માર્ગમાં અન્યને જોડવારૂપ પ્રયત્ન.
- ૬ દાનાદિક ચાર ધર્મેનું યથાશક્તિ પાલન.
- ૭ મૈત્રી આહિ ચાર અને અનિત્યાહિ ધાર લાવનાની નિત્ય યાદ.
- ૮ માનવ બંધુઓ-ભગીનીઓ વિગેરેની યથાશક્તિ સેવા.
- ૯ પ્રમાણુકપણું, નીતિના સર્વ સામાન્ય નિયમોનું પ્રતિપાલન.
- ૧૦ ગૃહસ્થ તરીકેની ઝરણેનું પાલન.
- ૧૧ લક્ષ્મીની સાર્થકતારૂપ સુપાત્રદાન અનુકંપાદાન.

મહામંત્ર નવકાર—

- ૧ દ્વધીને ભથન કરવાથી જેમ તેમાંથી ઘૃતરૂપ તત્ત્વ પ્રાપ્ત થાય છે તેમ ચૌં પૂર્વેના હોહન-સારરૂપ એક માત્ર શ્રી નવકાર મંત્ર છે.
- ૨ નવ લાખ અથવા તેથી વધારે ગણુવાથી નરક આહિ અશુલ ગતિઓથી બચાવનાર એક માત્ર નમરકાર મહામંત્ર છે.
- ૩ મૃત્યુ વખતે જેના સમરણુથી શુલ ગતિગમનની ખાત્રી ભણે છે તે શ્રી નવકાર મંત્ર છે.
- ૪ અનંત લવોના એકઢા થયેલા પાયકર્મો જેના સમરણ માત્રથી દહન થઈ જય છે તે શ્રી નવકારમંત્ર છે

વિવિધ વિચારશૈખું.

૧૪૧

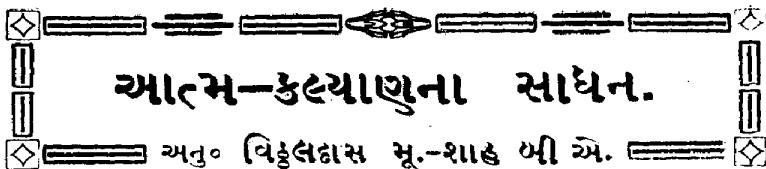
૫ જેના સમરણુથી ભૂત-પ્રેતાદિક હુલકા પ્રકારના વ્યંતરેની શક્તિ કુંઠિત થઈ જાય છે-મતુષ્ય પર તેની અસર નથી જતી, તે શ્રી નમસ્કારના જ પ્રલાવથી.
૬ એવા મહામંગલકારી સર્વ મંગદોમાં પ્રથમ મંગલરૂપ શ્રી નમસ્કાર મહામંત્રનું સૌ કેાદ એકાથ ચિંતે ધ્યાન કરો.

મહાગુણ : સેવા—

- ૧ સેવા એ મહાન અપ્રતિપાતિ ગુણ છે.
- ૨ તેથી હુગંધા જાય છે.
- ૩ નમ્રતા કેળવાય છે (સેવાથી).
- ૪ જીમારના હૃદયના ઉંડાણુમાંથી નીકળેલા આશીર્વાદો મળે છે
- ૫ અહુશુલ્ષે, નિયંથ સુનિજનો આદિ તેમ જ શ્રી જિન વિગેરેની સેવાથી સેવક પોતે સેવ્ય બને છે અર્થાત् તે પદ પ્રાપ્ત થાય છે.
- ૬ સેવામાં લેદ ન હોવો જોઈએ. પોતાનો અને પારકાનો, નાના-મોટાનો,
પૂજય-અપૂજયનો, સ્વી-પુરુષનો, સ્વભન્તિ-પરભન્તિનો, સ્પૃશ્ય-અસ્પૃશ્યનો
મતુષ્ય-તિર્યંચનો વિના લેદે, વિના સંકોચે જ્યાં જરૂર હોય ત્યાં ખરો સેવા-
લાવી પહોંચી જાય છે.
- ૭ સેવાલાવ વધુ ને વધુ વિકાસ પામો એમ દુચ્છિએ.

જીલમાં શું રહેલું છે ?--

- ૧ જીલમાં અમૃત રહેલ છે.
- ૨ જીલમાં જેર પણ રહેલ છે.
- ૩ જીલથી મિત્રતા ખંધાય છે.
- ૪ જીલથી હુશમનાવટ પણ થાય છે.
- ૫ જીલમાં મિષ્ટભાષીપણું છે. સારા, મરુ-કોમળ અને વિનયવાળા વચનો
ઓલાય છે.
- ૬ જીલમાં કટુલાષીપણું છે. કડવા, નિર્દ્ય, મર્મધાતક, અવિનયી એવા
વચનો પણ ઓલી શકાય છે.
- ૭ જીલથી વિજય પ્રાપ્ત થાય છે.


આતમ-કલ્યાણના સાધન.

અતું વિડુલદાસ મૂ.-શાહ બી. એ.

ત્રણુ વાતોથી હુમેશાં બચ્ચો-પોતાની પ્રશંસા, ખીજની નિંદા અને પરહોષદર્શન, ત્રણુ વાતો ધ્યાન રાખીને કરો-ઈશ્વરનું સમરણ, ખીજનું સંન્માન અને પોતાના દોષ જોવા તે.

ત્રણુ વાતનો હુમેશાં વિચાર કરો-લગવાનનો ગ્રેમ ડેવી રીતે પ્રાપુ થાય ?

હુઃખીનાં હુઃખ ડેવી રીતે ફ્રાર થાય ? હૃદય પાપશૂન્ય ડેવી રીતે થાય ?

ત્રણુ વાતોટો હુમેશાં અમલ કરો-સત્યનો અહિંસા અને લગવાનનો નામજ્ઞય.

ત્રણુ વાતોથી સહા અલગ રહો-પરચર્ચા, વાદવિવાહ તથા નેતાપણું.

ત્રણુ પર સહા હ્યા કરો-અખલા ઉપર, પાગલ પર અને માર્ગ-ભૂલેલા પર.

ત્રણુ પર હ્યા ન કરો-પોતાના પાપ ઉપર, આળસ ઉપર અને ઉચ્છ્વાખલતા ઉપર.

૮ જીલથી પરાજ્ય પણુ મળી શકે છે.

૯ જીલવી યથ-કીર્તિ મળી શકે છે.

૧૦ જીલથી અપયશ-અપકીર્તિની પ્રાસિ પણુ થાય છે.

૧૧ જીલથી મનુષ્યને સર્વત્ર માન મળે છે.

૧૨ જીલથી મનુષ્ય અપમાન પામે છે.

૧૩ જીલથી સ્તુતિ થાય છે.

૧૪ જીલથી નિંદા પણુ થઈ શકે છે.

૧૫ જીલથી મોટા સંભ્રામો થાય છે.

૧૬ જીલથી સુલેહશાંતિ પણુ થાય છે.

૧૭ જીવનના પ્રત્યેક ક્ષેત્રમાં “જીલ” અગત્યનો લાગ લજવે છે. જે તેને કાખૂમાં રાખવામાં આવે તો તેનો સહૃપચોગ થાય છે અને જે તેને છૂટી મૂકવામાં આવે તો અનેક હુર્ઝણોની પરંપરા-હુઃખોની પરંપરા પણુ તેનાથી સાંપડે છે. અસ્તુ !

રાજ્યપાણ મગનલાલ ઠકોરા.

આતમ-કલ્યાણના સાથે.

૧૪૩

ત્રણુને સહા વશ રાખો-મન, ઉપસ્થ ઈન્દ્રિય અને જીબ.

ત્રણુને વશ હંમેશા રહો-લગવાનને, ધર્મને અને શુદ્ધ કુલાચારને.

ત્રણુથી સહા સુકૃત રહો-અહંકારથી, મમતાથી તથા આસક્તિથી.

ત્રણુ પર મમતા કરો-ઈશ્વર પર, સહાચાર પર અને ગરીયો પર.

ત્રણુથી સહા ડરતા રહો-અલિમાનથી હંભથી અને લોલથી.

ત્રણુની સમક્ષ સહા નાચ રહો-શુરૂ, માતા તથા પિતા.

ત્રણુ સાથે સહા પ્રેમ કરો-ઈશ્વર, ધર્મ અને દેશ.

ત્રણુને હંમેશ હૃદયમાં રાખો-હૃદય, ક્ષમા તથા વિનય.

ત્રણુનું સહા સેવન કરો-સન્ત, સત્યાખ અને પવિત્ર ભૂમિ.

ત્રણુને હૃદયથી હુર કરો-રાગ, દ્રેષ તથા મત્સર.

ત્રણુ પ્રતોનું સહા પાલન કરો-પરસ્ક્રીસેવનનો ત્યાગ, પરધનનો ત્યાગ અને અસહાયની સેવા.

ત્રણુ વતોમાં શાંકા ન કરો-શાસ્કવચન, શુરૂવચન તથા શુદ્ધ મનની ગ્રેશણ.

ત્રણુનું ભરણુપોષણુ કરો-માતાપિતા, સ્વી-ખાળકો તથા હીન-હુઃખી.

ત્રણુ પ્રકારના દોકોથી હુર રહો-નાસ્તિકથી. માતાપિતા અને શુરૂનો દ્રોહ કરનારથી તથા સંતપુરુષોની નિંદા કરનારથી.

ત્રણુની દશા પર વિશેષ ધ્યાન રાખો-વિધવા સ્વી અનાથ ખાળક અને પરાશ્રિત પ્રાણી.

ત્રણુની આવશ્યકતા પર વિશેષ ધ્યાન આપો-મુંગા પ્રાણી, સંસારત્યાગી અને કંઈપણ ન માગનાર અતિથિ.

ત્રણુની પરવા ન કરો-ધર્મપાલન ખાતર કષ્ટની, ખીજના હુઃખ હુર કરવા ખાતર ધનની અને રોગીની સેવા કરવામાં પોતાના શરીરની.

ત્રણુ જણુને ન રોકો-જલ્દી ચાલનારી ગાડીમાં ચડવાની ઈચ્છાવાળા સુસાફ્રને, ખીજની સેવા કરનારને તથા દાતાને.

ત્રણુ કાર્યમા ખૂબ ઉતાવળ કરો-લજનમાં, દાનમાં અને શાસ્કના અભ્યાસમાં.

ત્રણુ કાર્યોમાં ઢીલ કરો-મુક્કદમાખાળુમાં, વિવાહમાં અને કોઈના દોષનિર્ણયમાં.

ત્રણુ આવેશો વખતે કોઈ પણ ક્રિયા કરતાં અટકી જાઓ-કોધ વખતે, કામવાસના વખતે અને લોલ વખતે.

ત્રણુનું સન્તમાન કરો-વૃદ્ધનું, પવિત્ર આદ્યાણુનું અને નિર્ધનનું.

१४४

श्री अट्टमानंद प्रकाशा.

त्रिषु कार्यं खूब मन लगाड़िने करो-लज्जन, लगवान्तुं ध्यान अने सत्संग.

त्रिषु आंसु-पवित्र मानो-प्रेमनां, कुरुषुनां अने सहानुभूतिनां.

त्रिषु आंसु अपवित्र मानो-शोकनां, कोधना अने हंलनां.

त्रिषु बनवामां सुख मानो-अज्ञान सेवक, व्यथे निंदाना पात्र अने परसुभनां साधन.

त्रिषु वातोनो हुराथड न करो-संप्रहायनो, पोशाकनो अने पोताना भतनो.

त्रिषु वातोनो हुमेशां सदाथड राखो-सत्यनो, धर्मनो अने सच्चरित्रनो.

त्रिषु बनावो-धर्मशाणा, झूवा अने हेवमन्दिर.

त्रिषुनी धृष्णु न करो-रोगीनी, निर्धननी अने हलडी जातिना लोडेनी.

त्रिषुनी धृष्णु करो-पापनी, अलिमाननी अने भननी भलिनतानी.

त्रिषु जग्याए न जाए-वेश्यागृह, जुगारभातुं अने हारनुं पीहुं.

त्रिषु जग्याए हररैज जाए-हेवमंहिर, संतनी जुंपडी अने आलुविकातुं स्थान.

त्रिषुनी भक्तरी न करो-अंगुलीननी, विधवा अथवा अनाथनी अने हीन-हुँगी प्राणीनी.

त्रिषुने हुमेशां प्रणाम करो-धृथर, मातपिता, पति वर्गेरे शुद्धन तथा संत भलातमा.

त्रिषु बाखतो भननी उन्नति भाटे हुमेशा नियमित करो-स्वाध्याय, ध्यान अने पोताना मानसिक होषेनुं स्मरणु.

त्रिषु बाखतो स्वास्थ्य भाटे हुमेशां नियमित करो-शुद्ध हवामां इरवुं, नियमित आहारविहार अने कुपथनो त्याग.

त्रिषु बाखतथी ज्ञान भणे छे-श्रद्धा, तत्परता अने धन्द्रय संयम.

त्रिषु नरकना हरवानमां कही पछु न जाए-काम, कोध अने लोल.

त्रिषु आवश्यक साधन करो-समता, संयम अने सर्वं प्राणीओना छितनी चेष्टा.

त्रिषुने शुह न अनावो-खी सेवीने, धनना लोलीने अने हंलीने.

त्रिषुनुं चिंतन न करो-खीनुं; धननुं अने नास्तिकतुं.

આતમ-કલ્યાણના સાધન.

૧૪૫

ત્રણું ચિંતન નિત્ય કરો—ભગવાનનું, સંતવાણીનું અને વૈરાગ્યનું.

ત્રણ મુખ્ય સાધન કરો—વૈરાગ્ય, અદ્યાત્મ અને લગવાનની કૃપા પર વિશ્વાસ.

ત્રણ મહાન શક્તિઓનો આશ્રય થણું કરો—લગવાનની શરણુગતિ, લગવતૃપા તથા આત્મશક્તિ.

ત્રણ પર વિશ્વાસ રાખો—લગવાનની દ્વારા પર, આત્માની શક્તિ પર અને સત્ય શુદ્ધ આચરણ પર.

ત્રણ પર આસ્થા ન રાખો—કૂટનીતિ પર, હુરાચાર પર અને અસત્ય પર.

ત્રણ બાળત ભૂલી જાઓ—આપણે કોઈના ઉપર કરેલો ઉપકાર, ખીજાએ આપણા પર કરેલો અપકાર, તથા ધન, માન, સાધન. વગેરે ને લઈને આપણી ઉંચી સ્થિતિ.

ત્રણ બાળત યાદ રાખો—આપણે કોઈને કરેલું તુકશાન, ખીજાએ આપણા ઉપર કરેલો ઉપકાર અને ધન, માન, જીવન વગેરે સર્વ અનિત્ય છે, વિનાશી છે એ નિશ્ચય.

ત્રણ ન ખનો—કૃતધન, દંભી તથા નાસ્તિક.

ત્રણ બનો—નાનુ, સરલ અને ધ્રશ્વરમાં શ્રદ્ધાળુ.

ત્રણનો આશ્રય હો—ઈશ્વરનો, આત્માનો અને નિરલિમાન પુરૂષાર્થનો.

ત્રણ બાળત ન જુઓ—પોતાના ગુણુ, ખીજના દોષ અને પ્રાણીઓની રતિ કીડા.

ત્રણ બાળત જુઓ—પોતાના દોષ, ખીજના ગુણુ અને મહાત્માઓના આદરો ત્યાગપૂર્ણ આચરણ.

ત્રણનું ખંડન ન કરો—ખીજના ધીષું, ખીજના શાખનું અને પોતાના નિશ્ચયનું.

ત્રણનું ખંડન કરો—કેવળ પ્રારંધનું, અકર્મણ્યતાનું અને શાખવિરોધી આચરણનું.

ત્રણ પ્રકારના વચન ખોલો—સત્ય, હિતકારી અને મધુર.

ત્રણ પ્રકારના વચન ન ખોલો—અસત્ય, અનિષ્ટ કરનારું અને કઢવું.

ત્રણ માટે જરૂર ખોલો—લગવદ્ધશુણુનુવાદ, આવશ્યક સત્યવચન તથા પરાપકાર.

ત્રણની સાથે હંમેશાં સનેહપૂર્ણ વર્તન રહો—પોતાની પત્ની સાથે, પોતાના નોકરો સાથે તથા ગરીબ લોકો સાથે.

ત્રણની સેવામાં તમારું સદ્ગલાંઘ સમજો—માતાપિતાની, સંતમહાત્માની અને હૃદ્દી જીવેની.

શ્રી આત્મારામજુ શતાધિદ લેખમાળા.

(લેખાંક ૧)

શતાધિદની પ્રરણા:-

પંનાયમાં હ્યાનંદ સરસ્વતી કે જેણો આર્યસમાજના સ્થાપક છે તેમની શતાધિદ થોડા સમય પર ઉજવાઈ, એ જોઈ પંનાયી બન્ધુઓને શ્રી આત્મારામજુ મહારાજની શતાધિદ ઉજવવાની ઈચ્છા ઉહ્ભાવી. એ વાત ભાગેજ ડોઈ લેનનથી અગ્નાણી હશે કે આત્મારામજુ મહારાજ અને હ્યાનંદજી સમકાળીન થથેલાં છે અને ઉલ્લયની આકૃતિઓ એટલી મળતી આવે છે કે નવીન જૈનાર એકને અહલે ષીજને ધારી લે. આમ છતાં ઉલ્લયના સિદ્ધાંતો જુદી દિશામાં ગયેલાં છે. હ્યાનંદજીએ મૂર્તિપૂજનો પ્રયત્ન વિરોધ કર્યો છે જ્યારે આચાર્યશ્રીએ એનો સ્થાપના સચેટ હ્લીકોથા સિદ્ધ કરી હેખાડી છે. જેમ હ્યાનંદે આર્યસમાજનું ભીજારોપણ કર્યું છે તેમ આચાર્યશ્રીએ પંનાય કે જ્યાં સ્થાનકવાસી સંપ્રદાય જોરમાં હતો અને મૂર્તિપૂજાક જૈનો શોધયા પણ જડતા ન હતા ત્યાં સતત પ્રયાસ સેવી મૂર્તિપૂજકો જન્માવ્યા અને દેવમંહિરાની અણુથી પંનાયને શોલિતું બનાવ્યું. જૈન સમાજ ઉપર પણ સુરિજુનો એછો ઉપકાર નથી એટલે ઉલ્લય વ્યક્તિઓએ પોતપોતાના ક્ષેત્રોમાં ચેતનાના પૂર રેડ્યા અને નવીન સમાજને જન્મ આપ્યો, એ જેતાં પંનાયી બન્ધુઓને કે ભાવના જન્મની એ વાસ્તવિક છે. જ્યારે આચાર્યશ્રી વિજયવહ્સસરિ પાસે એનો સ્ફોર કરી પંનાય પવારવા વિનિંતિ કરી ત્યારે તેઓશ્રીને એક જ વિયાર આવ્યો કે જેમ આખા આર્યસમાજે શતાધિદ ઉજવી તેમ આપ્યો. જૈન સમાજ શા માટે આત્મારામજુ મહારાજની શતાધિદ ન ઉજવે ?

ત્રણુની સેવામાં આવશ્યકતા થતાં કદીપણું સંકોચ ન રાખો-મિત્રની, પોતાની પત્નીની અને અતિથિની.

ત્રણુ ખાખત શુસ્ત રાખો-સાધન, ધન અને મૈથુન.

ત્રણુ ખાખત પ્રકટ કરો-પોતાના પાય, ષીજનાં શુણું અને પરોપકારનાં સાધન.

ત્રણુ વાત પ્રકટ ન કરો-પરાયા છિદ્ર અથવા એવી વાત કે જેનાથી ડોઈનું ખરાબ થાય, પોતાના પુષ્યની વાત અને શુસ્ત મંત્રણું.

ત્રણુને માશે ચઠાવીને સુખી થાઓ-મહાપુરુષો તથા ભક્તોની ચરણરજ, તીર્થ-જળ અને પોતાની નિંદા

ત્રણુ પામીને પુલાદિ ન જાણો માન, પરનિંદા અને પોતાની મોટાઈ.

ત્રણુની કામનામાં ન ઇસાઓ-ધન, પુત્ર અને સન્માન.

વીસમી સહીના પ્રલાભિક જ્યોતિર્ધિ

શ્રી આત્મારામજી મહારાજની શતાંદ્રિ

વર્તમાન પેપરોદ્ધારા અને સ્થાન સ્થાન પર જ્યારથી ન્યાયાલોનિધિ પંનલખેણોદ્ધારક જૈનાચાય શ્રીમદ્બિજનયાનંદસુરિ પ્રસિદ્ધનામ શ્રી આત્મારામજી મહારાજને સો વર્ષ આ ચૈત્ર મહિને પૂર્ણ થાય છે, તેથી તેઓશ્રીની શતાંદ્રિ મનાવવાનું નક્કી થયું છે ત્યારથી જૈન સમાજમાં, ગુરુભક્તોના અંતરંગોમાં લારે આનંદ ડાર્મિઓ ઉછળી રહી છે, દરેકના મનોસુમનો પ્રકૃષ્ટિત થઈ રહ્યા છે અને ચૈત્ર માસની રાહ ચાતકની માર્કડ નેઈ રહ્યા છે. લાગ્યવાનો આ પુનિત પ્રસંગને ઘણું જ ઉત્સાહથી, અપૂર્વ કાર્યથી ઉજવવા પ્રયત્નો સેવી

આત્મારામજી મહારાજે પંનલખમાં જૈન ધર્મનો વિજય ધવજ ફરકાવ્યો એ સાચી વાત છતાં તેઓશ્રીનો ઉપકાર ણીજ પ્રાંતો પર ઓછા ન હોતો. શુન્જરાત-કાઠિયાવાડ-મારવાડ આહિ સ્થળોમાં તેઓ વિચચારને પોતાની ઉપહેશશૈલીથી જૈન ધર્મના તરવોનો પ્રચાર કર્યો. એ કંઈ શિષ્ય સમુદ્દ્રાય આન્ને વિશાળ પ્રમાણુમાં દ્રષ્ટિગોચર થાય છે તે મુખ્યત્વે કરીને એ મહારાજશ્રી તેમ જ તેમના ગુરુભાઈ એવા શ્રી વૃદ્ધિયંદળ અને શ્રી મુળયંદળ મહારાજનો છે. એ શુદ્ધ બંધુઓ વચ્ચે એખલાસ પણ સારો હતો. એ સંઅંધમાં વધુ વિચાર આગળ પર કરીશું. અછો તો કહેવાનું એ જ છે કે આચાર્યશ્રીની સલાહથી પંનણી ભાઈઓને પ્રેરણું થયેલી તે સારાયે હિંદુભરની જૈન સમાજ માટે પરિણમી. આમ આત્મારામજી મહારાજની શતાંદ્રિ ઉજવવાની લાગનાનો જન્મ થયો અને કુમશ: સૂરિશ્રીના વિહાર સાથે એને વિસ્તાર વધવા માંડ્યો. એ ડેવી રીતે વધ્યો? આન્ને એ સંઅંધમાં શું શું થઈ રહ્યું છે? એ કયાં ઉજવાશે? ધત્યાહિ સગાલોની ચર્ચા આપણે અવસ્થ્ય કરીશું પણ એનું સ્થાન અતિમ રહેણો. આ પ્રેરણે આત્મારામજી મહારાજના કેટલાક જીવનપ્રસંગો જોવા પડશે. એની સાથે વર્તમાન જૈન સમાજની પરિસ્થિતિનું તોલન કરું પડશે અને એ પરથી ફલિતાર્થ તારવો પડશે કે આપણે શતાંદ્રિથી શું સાધન માંગીએ છીએ. એક વાત એટલા સારું કહી દઈએ કે ગુરુમહારાજના કેટલાક શિષ્યો તરફથી એવો પ્રશ્ન ઉપસ્થિત કરાયો છે કે શતાંદ્રિ જન્મથી ગણુંવી કે સંવેગી સાધુ અન્યા ત્યારથી? આનો જવાય એક જ છે કે વ્યવહારમાં જે રીતે સો વર્ષ ગણુંવામાં આવે છે તે રીતે આ ગણુંવી છે એમાં ચર્ચાને અવકાશ નથી ધર્માચાર થાય તો ખુલ્લા હદ્દે સાથ આપો. અને શુરૂમ દાખવો; નહિંતર શાંત રહો અને થતું કાયં નિબાળો. નકામા પથરા ઝંકવાથી શો લાલ? “શુભે યથાશક્તિ યતનીયમ” એ ન્યાયે આ કાર્ય થઈ રહ્યું છે અને શુરપ્રતાપે એમાં આનંદ રહેણો.

શ્રી ચોકશી,

૧૪૮

શ્રી આત્માનહે પ્રકાશ.

રહ્યા છે. આવેલી સોનેરી તકને વિશ્વમાં વિશ્વબ્યાપક અનાવવા લક્ષ્યો તનાતોડ જહેમત-પરિશ્રમ ઉડાવી રહ્યા છે. જૈન સમાજના આંગણે આવેલી, પૂર્વના પુષ્ટ્યોદયથી મળેલી આ સોનેરી તકને સફળ કરવા, ચીસમી સહીના હેઠીએયમાન ઈતિહાસમાં સુવખ્યક્ષિકૃ લખવા-લખાવવા લરચક શુલ પ્રયત્નો આદરી રહ્યા છે. પંનખથી માંડીને મારવાડ-મેવાડ, ગુજરાત, કાઢિયાવાડ, દક્ષિણ-મહારાષ્ટ્ર, મદ્રાસ, અંગાલ, રંગુન, કરાંચી, અને આક્રિકા જેવા જેવા દેશોમાં ગુરુભક્તો પોતાની લક્ષ્યનો પરચો આપી રહ્યા છે,

આ શતાખ્ચિદનું કાયમ સ્મરણું રાખવા એક સુંદર ઝંડની વ્યવસ્થા કરવામાં આવી છે. એ ઝંડમાંથી શ્રી આત્મારામજી મહારાજના સ્વહરસ્તે લખાચેતા પુસ્તકોનો ઉડાર થશે, પ્રાચીન જૈન ઈતિહાસનો પુનરૂદ્ધાર થશે, પ્રાચીન સાહિત્યનો ઉડાર થશે અને જુની શોધઓણો કરી શૃંખલાબંધ અનેક પ્રાચીન-અવાચિન પ્રમાણો મેળવી જૈનધર્મની પ્રાચીનતા જિંદ્ગ થશે, તેમજ વર્તમાન પદ્ધતિને લક્ષ્યમાં લઈ ચાલુ લાખાઓમાં, દેશ-દેશની વિવિધ લાખાઓમાં શાસનપત્ર શ્રી મહાવીર પ્રભુના મધુર ઉપદેશોનો, તત્વોનો અને હિત-કારી સારભૂત સુંદર ધોધવચનોનો ઉડાર થશે. પ્રત્યેક આત્માને પ્રભુ વચ્નોનો રાગી અનાવવા પ્રયત્નો યોજશે આ રીતે ઝંડની વ્યવસ્થા યોજાયેલી છે.

આથી પ્રત્યેક જૈનની એ કુરજ છે કે પોતાની શક્તિનુસાર લક્ષ્યનો લાલ લેવા, આ ઝંડને વધુ પુષ્ટ અનાવવા પ્રયત્નો કરવા જેઠિયો. હુરેક ગામવાળાઓને આથી સૂચના કરવામાં આવે છે કે તમોએ શતાખ્ચિ માટે પ્રેમ-હાર્દિક લાવ લે રીતે ખતાવ્યે તેવી જ રીતે તમો તમારા ગામમાં નગરમાં ઝંડનું કામ ચાલુ કરો, તમો તમારા આડાસી-પાડાસીઓને, ભિત્રોને, સંબંધીઓને અને તમારા લાગતાવળગતાઓને આ ઝંડના મેંબર અનાવો. ચિરસ્મરણીય આ કાર્યમાં સુંદર ઝાળો આપી, અપાવી દાતાઓનું નામ અમર અનાવવા પ્રેરણુંયો કરો. જુંગાની આ સુંદર તક સાધવા અને ગુરુભક્તિનો લહાવો લેવાનો છે. વારં-વાર આ ટાઈમિ નથી મળવાનો એ સહુંયો ધ્યાનમાં રાખવું જરૂરી છે.

આ શતાખ્ચિ ઝંડમાં એક સોને એક લરનાર મેંબર ગણ્યાય છે. ઝંડની વ્યવસ્થા વખતે પોતાનો અવાજ પહોંચાડી શકે છે. તેમ જ એક સોને એક લરનારને સ્મારક અંક, જે શતાખ્ચિ મહેાત્સવ ઉપર દળદાર પુસ્તકરૂપે અનેક નામી વિદ્વાનોના સુંદર-ધોધપ્રદ લેખાથી લરેલો પ્રગટ થશે તે આપવામાં આવશે. એ સ્મારક અંક અહાર આવતાંની સાથે ઈતિહાસમાં અનેરો જ

વીસમીસહીના-જ્યોતિર્ધરની શતાંધિ.

૧૪૮

પ્રકાશ પાડનાર નીવડશે. હુનિયાના સુપ્રસિદ્ધ લેખકેના લેખો-ધજિલશ, હિન્દી, ગુજરાતી અને સંસ્કૃત ભાષાઓના લેખાથી એ અંક સ્મારક-અંથ વિભૂષિત બનેલો પ્રત્યેક મેંબરેના ડોમલ કરકમલમાં આપવામાં આવશે. એ લગ્ય મનોહર સ્મારક અંક પુસ્તકાલયોનું એક ઉત્તમોત્તમ આભૂષણુરૂપ થશે તેમ જ દરેકનો સાચો મિત્ર થઈને રહેશે. આ સુંદર લાલ મૈળવવા દરેક ભ.ધ-બહેનોએ શતાંધિ ઇંડમાં પોતાનું નામ મેંબર તરીકે લખાવી પોતાનું નામ અમર બનાવવું જ જોઈએ.

યઘપિ આ ઇંડમાં વધુમાં વધુ રકમ એક સો ને એક રાખવામાં આવી છે. જેની શક્તિ આટલી રકમ આપવાની ન હોય તે પોતાની શક્તિને વિચારીને જેટલી આપે તેટલી લેવી પણ એમ ડરાયું છે. ડોધએ સુંઝાવું ન જોઈએ કે એક સો ને એક જ આપવાના છે. નહીં, નહીં તમારી લાવના હોય તેટલી રકમ આપી શકો છે. જરૂર આપો અને તમારું નામ પ્રંડમાં નોંધાવો. આ પ્રંડ કેવળ શ્રીમન્તો માટે નથી પરંતુ દરેકને માટે છે. કહેવાની મતલબ એટલી જ છે કે સહુ ભાઈ-બહેનો આ પ્રંડમાં પોતાનું નામ શક્તિ અનુસાર લખાવો એ જ મારી સૂચના છે.

અતે એક વાત જણાવી હું છું કે આ કાર્ય પૂજયપાહ પ્રાતઃસ્મરણીય આચાર્ય શ્રી વિજયવિલસુરીશ્વરજી મહારાજે પોતાની ઇરજ સમજુને પોતાના માનનીય અને પૂજયોની સાથે પુણ્ય વિચારણા કરીને જ પછી બહેર કર્યું છે. કોણ એવો લાગુહીન હશે કે આવેલો આ બહુ ભૂજ્યસમય ન વધાવી લે ? આ કાર્યથી જૈન સમાજને ધણો જ ફાયદો રહેલો છે, તેથી યહિ ડોધ તમારા સમક્ષ પોતાની પુરજને ભૂલાવી હ્યા, શુદ્ધોહીપણું આ વખતે કાર્ય લજવે તો તમો તે વખતે સારુ જણાવી હેલે કે પૂજયવર્ય શ્રી આત્મારામજી મહારાજ એકલા શ્રી વિજયવિલસુરિજી મહારાજના નથી પરંતુ આખી જૈન સમાજના એ તારણહાર મહાત્મા છે, તેથી આ ડામ પણ જૈનસમાજને અધિક ફાયદો પહોંચાડનાર છે એમાં એ મત ડોધના હોય એમ લાગતું નથી. શ્રી આત્મારામજી મહારાજની શતાંધિ તો કેવળ નિમિત્તભૂત છે. લાલ તો જૈન સમાજને થવાનો છે.

વીસમીસહીના શ્રી આત્મારામજી મહારાજ મહાન् જ્યોતિર્ધર થઈ ગયેલા હોવાથી, તેમજ નીકટના પરમોપકારી હોવાથી એઓશ્રીના ઉપકારોનું પવિત્ર સ્મરણુ આ શતાંધિદ્વારા કરી આપણે આપણી ઇરજ અહા કરવાની

१५०

श्री आत्मानं प्रकाश।

लावनगरमां जैनोने अंगे शुं शुं छे ? ते भाटे कुंकुं खुलासो।

(चर्चापत्र)

ક्षेत्रपण गाम या शहेरमां जैन समाज भाटे जाणीती वस्तु शुं शुं छे ते ज्ञानवतुं ते एक सामान्य डीरेक्टरी जेवुं गणी शकाय अने तेने भाटे पूर्ण मालिती मेलव्या पछी प्रकट कराय-ज्ञानवाय ए सीधो भार्ग छे; छतां पोता भाटे कुंकुं अने अन्य भाटे जाणुवा छतां, नजरे जेवा छतां, अपूर्ण लभ्युं के वीचडुक न ज्ञानवतुं अने तेवी रीते प्रकट करवुं ते भीज भाटे अन्याय पूरतुं गणाय के डेम ते वाचकने सोंपा ते भाटे हवे खुलासो करीअे छीअे. आ भासना लाधार्थ जैन धर्म प्रकाशमां पा० ३२७ में लावनगरमां जैनोने अंगे शुं शुं छे ? ते लेखमां लेखक पोतानी भानेव वस्तु भाटे तो गमे ते लभी शके; परंतु आ सभानी लक्षित ते पेजमां २० मां नं०८२मां ज्ञानवतां अपूर्ण अने पोते जाणुवा छतां श्री कुंवरकु भाधाये अमुक भास वस्तु जाणुवा जेवी छाडी दीधी छे. पोते पोताना संरथा भाटे “ सारा पायावाणी लाठब्बेरी अने वांचनालयवाणी ” एम लाये छे अने “ आ सभानी लाठब्बेरी अने वांचनालय झी छे, जेमां हथ दिनर पुस्तका छे अने पर पेपरे आवे छे, जैन अने जैनेतर पुष्टका मनुष्यो लाभ ले छे तेटवुं ज नहिं पथ लावनगरनी तो शुं परंतु दिन्हमां जैनोना वस्तीवाणी शहेरमां ज्यां ज्यां जैनोना लायब्बेरीओ छे, तेना करतां सारी अने व्यवस्थित प्रथम नंबरे आ सभानी लायब्बेरी छे, एम हर्षनशास्त्रना अब्यासी, जैनधर्मना प्रभर अब्यासी जर्मन ग्रोइसर छे.

छ. बाडी जेओ श्री आत्मारामण महाराजना कडेवातां छतां, श्री आत्मारामण महाराजना नामे आज सुधी पोतातुं टकु चलावे जतां छतां जेओ श्री आत्मारामण महाराजने मानतां ज नथो एवा हुनीयाथी उतरी गच्छेलाएने हूर करी देवा जेइअ. एमां ज जैनसमाजतुं कल्याण रहेलुं छे. जेओने पोताना शुद्धनीज पडी नथी ए जैनसमाजतुं शुं उकाणवाना हुता ? आवाओ—कर्त्तव्यशून्ये शताभिः भाटे गमे तेम पोकारे करे तो करवा ज हवा. आपणे शांतिथी कार्यने सङ्कण करवा ज ध्यान आपवुं जेइअ.

अंतमां आटलुं ज निवेदन करवुं उचित धाइं छुं के आपणा लाग्यो-हये प्रास थच्चेव आ शताभिने हुरप्रकारे सङ्कण करवा अने विश्वमां व्यापक जनाववा सहुअे एकी साथे योग्य प्रयत्नो आहरवा जेइअ. शासनहेव अधा शुद्धलक्षितना अनुपम कार्यमां प्रेरणा करे एटलुं छक्की अत्रे ज विरसुं छुं.

अधारी (वापी)
१६६२ आठम सं० ४०
ता. १७-१२-३५
मंगળवार

} पूज्यपाद आचार्य श्री विजयवह्निसूरीधर
महाराज अंतेवासी
व्यापक



हां मूर्तिपूजा शास्त्रोक्त हैः—लेखक मुनिश्री गानसुंदरज्ञ महाराज् श्री रत्नप्रभाकरगानपुष्पमाणाना १५३ भा नं०२ तरीके आ शुक्लोही-मारवाडी प्रगट थयेल छे. अनेक शास्त्राधारी आपी मूर्तिपूजा आ लघु शुक्लमां सिद्ध करवामां आवी छे, तेटलुं ७ नवि परंतु लेखक मुनि महाराजे भूर्ति नहिं भाननाराओना सिद्धांत लध तेने दक्षीच-पूर्वक असिद्ध करी यताव्या छे, किं भत त्रण आना. प्रकाशकने त्यांथो भणी शक्षे.

मुंख्यकी कवची दशा ओशवाणी जैन शातिनुं वस्तीपत्रक (सं: १६६१)
प्रसिद्धकर्ता प्रकाशक समिति.

हरेक डामने पोतानी व्यवहारिक अने धार्मिक उन्नति भाटे वस्तीपत्रकनी उपयोगिता सर्वदेशीय, सर्वभान्य होय छे ९८. वस्तीपत्रक ते डामना भाटे दर्पण्यु समान छे, तेनाथी ते डाम भाटे शुं शुं करवुं योग्य छे ते यतावनार लोभीया समान छे. वेपारमशहुर श्री कवची दशा ओशवाणी अंधुओओ पोतानी शातिनुं वस्तीपत्रक तैयार कर्युं ते डडापण्युभरेतुं कार्य कर्युं गण्याय. हरेक शातिओने आ रीते दर वर्षे आ रीते वस्तीपत्रक करवानी जडू छे नेथी. शातिनी प्रगति थर्ह शक्ते. अमो आ अंधुओने धन्यवाद आपीओ छीओ.

नव युगनो जैन—लेखक श्रीयुत मोतीचंह गिरधरलाल कापडीया. प्रकाशक न्योति कार्यालय—अमदावाह ३। १-०-०. लेखक मोतीचंहसाधना अत्यार सुभीनां वांचन, अवलोकन अने अनुलवना विचारोना परिण्यामहि पे आ चंथ तेओयो लघ्यो छे. लविष्यमां व्यवहार अने

सुखीन साहेब पण्यु आ सबाना रेक्डमां नोट करी गया छे, ते हकीकत, सिवाय आ सबानो शानबंडर (मुनिराज श्री अजितनिज्यज्ञ महाराज, मुनिराज श्री लक्ष्मिनिज्यज्ञ महाराज) वर्गेरेए सुप्रत (बेट) करेक छे जेमां शुभारे सोणसो लण्डेली प्रतो (आपो लंडर) ते सिवाय छापेल प्रतोनो छे, ते जाणवा छतां श्रीयुत कुंवरज्ञलाध ते हकीकतने उपरोक्त लेखमां भीलकुल जाणुवतां नथी, तेटवा भाटे जाहेरनी जाण माटे आटलुं जाणुववा जाए आ सबानी ज्यारे ज्यारे डाई वर्षत डाई वर्षतु मेटर होय त्यारे कुंवरज्ञलाध आवी उद्दासीनता केम सेवे छे ? अपूर्ण हकीकत के जाणुववामां आवेद छक्कत छतां केम भूले छे ? ते समझ शकातुं नथी. ते भाटे आटदो शुलासो लघ्यो. पड्यो.

मासीक कमीठी.

१५२

શ્રી આત્માનંદ પ્રકાશ.

ધર્મમાં મનુષ્યને માર્ગદોર્વી શકે અને તેમાં ઉપયોગી થાય તેવી અનેક બાધાઓનો પોતાના વિચારનો સંઘર્ષ આ અંથમાં કર્યો છે. જમાનાના તે કાળને કે અત્યારે કેટલું ઇન્ફીકર કે અન્ફીકર કે બધાભેસતું થાય તેને માટે લેખકશી ડોર્ઢ જાતનો હાવો ધરાવતા નથો, પરંતુ અત્યારે શું પરિસ્થિતિ છે? ભવિષ્યમાં શું થશે? અને શું કરવું જોઈએ? તે માટે, આ અંથમાં પોતાના વિચારો જણાવે છે. આ અંથમાં ચચ્ચાખી મુદ્દા ઉપર ઉહાપોહ તો જરૂર થનો જોઈએ, થશે જ. આમાંની ધર્થી હકીકતો વાંચી અમૃત વિચારવાળા લડકશે પણ ખરા અને આ અંથમાં આવેલા બધા વિચારાને બધા સંમત ન પણ બને; પરંતુ વર્તમાન યુગને વિચાર કરવાતી પ્રેરણા ભગત્રા-થના માટે લેખક મહાશયે પોતાના વિચાર આમાં અતાયા છે, એકંદર રીતે આએ અંથ વાંચવાના જરૂર છે, જેમેણી અંથમાના પાંચમા પુસ્તકર્પે અને જૈનજ્યોતિ પેપરના માહકોને લેટ તરીકે આ અંથ આપવામાં આવેલ છે.

દિગંબર જૈન:—(કહાની અંક) સચિત્ર. જુદા જુદા વિદ્યાનોના હિંદી અને ગુજરાતી વિવિધ લેખો, વર્તમાન સમાચારો અને અનેક વિદ્યાનો વગેરેના છખીઓવડે આ અંક સુંદર અનાંદો છે. દર વર્ષ આ જાતની પ્રવૃત્તિ આ માસિક મોટો અર્થ કરી શકે છે અને દિગંબર જૈન સમાજને આ માસિકદ્વારા અનેક જાતનું સાહિત્ય વાંચન પૂર્ણ પાડે છે. તેમનો આ સુપ્રથત્તન પ્રશંસાપાત્ર છે. ૨૬ મા વર્ષના પહેલાંથીના અંક તરીકે આ સચિત્ર અંક પ્રગટ કરવા તેના સંપાદક અને પ્રકાશક શોઠ મુલયંદ કિસનદાસ કાપડીયા. [સુરત] ધન્યવાદનો પાત્ર છે.

સુધારો—ગયા અંકના પ્રથમ પાનાની અભ્યરમાં દશમી લીટીમાં આ શ્લોકના ૨૧ અર્થ થાય છે તેને બદલે ૫૨ અર્થ થાય છે તેમ સમજવું

શોઠ અનુપચંદ કલયાણુણો સ્વર્ગવાસ.

વળાનિવાસી ભાઈ અનુપચંદ વળાથી પોતાના વ્યવહારિક કર્મે અને આવતાં માત્ર હાર્ટેક્લથી તા. ૨૪-૧૨-૩૫ ના રોજ શુમારે પચાસ વર્ષની ઉપરે અચાનક પંચત્વ પાખ્યા છે. વળામાં જાનદાન મહેતા કુટુંબમાં શ્રીમંતાઇમાં જ-મ્યા હતા. તેઓ શ્રીમંત હેવા છતાં સાદા, સરલ, મિલનસાર, અદ્ધાળુ હૈન તરીકે સુપ્રસિદ્ધ હતા. આ સભાના તેઓ ધર્ણા વર્ષથી લાઈઝ મેન્યર હતા, જેથી તેવા એક સભાસદની સભાને પોટ પડી છે. તેઓશ્રીના આત્માને અનંત શાંતિ પ્રાપ્ત થાએનો. તેઓના કુટુંબને દ્વિલાસો આપવા સાથે તેના સુપુત્રો તેઓના પગલે ચાલી કુટુંબની કીર્તિમાં વધારો કરે તેમ ધર્મભીજે છીએ.

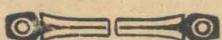
घण्ठी थाई नडेलो। छ. जलही भंगावो....

श्री कर्मचंथ. (४) मूण.

छेद्वामां छेद्वी ॲपे तेयार करेल श्री हेवेन्द्रसुरिकृत स्वेष्टज्ञ ग्रीका युक्त चारकर्मचंथ के ने आगण खडार पाडेल आवृत्तिओमां रહेल अशुद्धिओनुं तेमज आभा अंथनुं (अगाउ छपायेल केाध आवृत्तिओनो नहि) परंतु ऐ ताडपनीय प्राचीन प्रतो अने त्रिषु प्राचीन कागजनी प्रतोनो उपयोग करी अनुं संशोधन घण्ठीज प्रभाणुक रीते कर्युं छे. काणज्ञपूर्वक संशोधन मुनिराज श्री चतुरविजयल महाराजे तेमज तेमना विद्वान शिष्य साक्षरातम मुनिराज श्री पुष्टयनिजयल महाराजे आ अंथने सुधारवा तथा संपादने लगतां कर्यमां किंमती दिस्सो आपवाथी ज आवो शुद्ध अने सुंदर कर्मचंथना अव्यासीओ भाटे अति उपयोगी अने उपकारक आ अंथ अमो प्रगट करी शक्या छीओ.

स्थगे स्थगे पेरेब्राह्म पाइने निष्पेने छुटा पाडेला छे अने दरेक स्थगे प्रभाणु तरीके अनेक शास्त्रीय पाडो, ते क्या अंथो भांडेना छे तेना पणु नामो, तेना ग्रीष्मणो आपेला छे. छवटे ७ परिशिष्टोमां प्रथम ग्रीकाकारे प्रभाणु तरीके उद्धरेल शास्त्रीय पाडो, गाथाओ अने श्लोक वगेरे अकाराद्विम प्रभाणु आपेल छे. खीज अने नीजमां ग्रीकामां आवता अंथो अने अंथकारोना नामोनो कम चोथा कर्मचंथमां अने ग्रीकामां आवता पारिभासिक शब्दनो कारा, पांचमां ग्रीकामां आवतां पिंडप्रदृतिसूचक शब्दोनो केाध अने छेद्वामां वर्तमानमां उपलब्ध थतां श्वेताम्बार-दिग्म्बार संप्रतायना कर्मविधिक समय साहित्यनी तोंध आपवामां आवो छे.

उंचा झेन्ट्रोइ दागो उपर निष्पेयसागर ग्रेसमां सुंदर शास्त्रीय टाधपोथी छपावी सुंदर आर्द्धीगथा अवंकृत करवामां आवेल छे. आ अंथने अंगे अपेल आर्थिक संखाय थयेल अर्थमांथी भाव करी भात्र श. २-०-० ऐ इपीया (गोस्टेन जुहु) किंमत राखामां आवेल छे.



ज्यंति—मागशर वह ६ ना रोज स्व० महात्मा श्री मूणचंद्रल महाराजश्रीनी स्वर्गवास तिथि होवाथी गुडलकित निमित्ते आ सलाले सवारना साहाआठ वाजे श्री हादासाहेबना जिनालयमां आचायेश्री विजय-वक्त्वलसूरीश्वरल महाराजकृत “श्री पंचतीर्थ पूजा” लण्णाववामां आरी इती तेम ज अंगरयना करानवामां आवी हती.

Reg. No. B. 431.

અમાર્ગ પ્રકાશન ખાતું.

છપાયેલા અંથો. (મૂળ.)

૧ શ્રી વસુહેવહિંડિ પ્રથમ ભાગ-પ્રથમ અંશ.	રૂ. ૩-૮-૦
૨ શ્રી વસુહેવહિંડિ પ્રથમ ભાગ દ્વિત્ય અંશ.	રૂ. ૩-૮-૦
૩ શ્રી બૃહત્કલ્પસૂત્ર પ્રથમ ભાગ.	રૂ. ૪-૦-૦
૪ શ્રી હેવેન્દ્રસૂરિરચિત દીક્ષા ચાર કર્મઅંથ (શુદ્ધ)	રૂ. ૨-૦-૦

છપાતાં અંથો.

૫ શ્રી વસુહેવ હિંડિ ભીજે ભાગ.	૭ પાંચમે છુટો કર્મઅંથ.
૬ શ્રી બૃહત્કલ્પસૂત્ર ભીજે ત્રીજે ભાગ.	
૮ શ્રી ગુણચંદ્રસૂરિ કૃત શ્રી ભહાનીર ચરિત્ર. ભાપાંતર ગુજરાતી અંથો.	

૧ શ્રી શત્રુંજ્ય તીર્થનો પંદરમો ઉદ્ધાર. (તૈયાર છે.)	રૂ. ૦-૨-૦
૨ શ્રી સામાયક સૂત્ર. મૂળ ભાવાર્થ વિશેપાર્થ સાહિત.	રૂ. ૦-૨-૬
૩ શ્રી હેવસિરાઈ પ્રતિક્રમણ	રૂ. ૦-૧૦-૦
૪ શ્રી પાંચ પ્રતિક્રમણ સૂત્ર	ગુજરાતી તથા શાસ્ત્રી અંતે અક્ષરાવાળા (શ્રી જૈન એજયકેશનએડ બેન પાઠશાળાએ માટે મંજુર કરેલ). રૂ. ૧-૪-૦ રૂ. ૧-૧૨-૦
૫ શ્રી શત્રુંજ્ય તીર્થનો પંદરમો ઉદ્ધાર અને સમરસિંહ.	રૂ. ૨-૦-૦
૬ શ્રી શત્રુંજ્ય તીર્થ વર્તમાન ઉદ્ધાર અને કર્મશાહ	રૂ. ૦-૪-૦

શ્રી જૈન આત્માનંદ શતાધિઃ સિરિઝ.

(અંથમાળા) તરફથી પ્રકાશિત થયેલા અને થતાં પુસ્તકો.	
૧ શ્રી વીતરાગ ભહાદેવ સ્તોત્ર મૂળ.	૦-૨-૦
૨ પ્રાકૃતંધ્યાકરણ (અષ્ટમાધ્યાય સૂત્રપાઠ).	૦-૪-૦
૩ શ્રી વીતરાગ-ભહાદેવ સ્તોત્ર મૂળ સાથે ભાપાંતર.	૦-૪-૦
૪ શ્રી વિજ્યાનંદસૂરીધરણ (શ્રી આત્મારામણ મહારાજ) તું જીવનચરિત	૦-૮-૦

છપાતાં અંથો.

૬ વ્યારિતપૂજા, પંચતીર્થ પૂજા, શ્રી પાંચપરમેષ્ઠી પૂજા (ગુજરાતી અક્ષરમાં)	
૭ શ્રી નવસમરણાહિ સ્તોત્ર સંહારે.	
૮ શ્રી ત્રિપદીલાકા પુરુષ ચરિત્ર (મૂળ દશ પર્ચ) પ્રત તથા યુકાકારે. (નિર્ણયસાગર પ્રેસમાં)	
૯ ધાતુપારાયણ.	૧૦ શ્રી વૈરાગ્ય કલ્પલતા (શ્રી યશાવિજ્યજીકૃત)

આનંદ પ્રિન્ટિંગ પ્રેસમાં શેડ દેવચંદ દામણું છાપ્યું - ભાવનગર.